भारत सरकार

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 4383

20 अगस्त, 2025 को उत्तर देने के लिए

हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन

†4383. श्री मुकेशकुमार चंद्रकांत दलालः

क्या **विज्ञान और प्रौद्योगिकी** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) जुलाई 2018 से हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसएचई) के लिए कुल बजट आवंटन का वर्षवार और राज्यवार ब्यौरा क्या है;

(ख) सूरत क्षेत्र के हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु परिवर्तन के प्रति इसकी कमजोरियों का इसके आरंभ से अध्ययन करने के लिए एनएमएसएचई के तहत शुरू किए गए अनुसंधान कार्यक्रमों का ब्यौरा क्या है और इन अनुसंधान कार्यक्रमों के माध्यम से अब तक क्या प्रगति हुई है;

(ग) एनएमएसएचई के पारिस्थितिक महत्व और चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए इसके प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए क्या तंत्र है;

(घ) जलवायु-जनित प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूस्खलन और मृदा अपरदन के प्रभाव का अध्ययन करने और उसे कम करने के लिए उठाए जा रहे विशिष्ट कदमों का ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या सरकार की शहरीकरण और पर्यटन दबाव जैसी उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए एनएमएसएचई के दायरे का विस्तार करने की कोई योजना है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) अपने आंतरिक बजट आवंटन से जलवायु परिवर्तन पर दो राष्ट्रीय मिशनों अर्थात हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसएचई) और जलवायु परिवर्तन के लिए कार्यनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसकेसीसी) को कार्यान्वित कर रहा है। हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसएचई) के लिए कोई अलग से आवंटन नहीं है; हालाँकि, विभिन्न गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए जुलाई 2018 से एनएमएसएचई के तहत कुल 111.63 करोड़ रुपये की राशि संस्वीकृत की गई है। एनएमएसएचई के तहत स्वीकृत वर्षवार और राज्यवार बजट नीचे दिया गया है:

क्र. सं.	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	राशि करोड़ में 2018-19	राशि करोड़ में 2019-20	राशि करोड़ में 2020-21	राशि करोड़ में 2021-22	राशि करोड़ में 2022-23	राशि करोड़ में 2023-24	राशि करोड़ में 2024-25	कुल राशि करोड़ में
1	अरुणाचल प्रदेश	3.60	2.46	-	-	2.57	1.17	-	9.80
2	असम	3.04	9.04	-	-	-	-	-	12.08
3	दिल्ली	0.52	-	9.52	-	-	-	-	10.04
4	हरियाणा	-	-	-	-	1.55	-	-	1.55
5	हिमाचल प्रदेश	1.91	0.80	2.81	1.12	-	-	-	6.64
6	जम्मू और कश्मीर	1.88	7.85	-	-	2.74	0.73	-	13.20
7	कर्नाटक	0.41	-	-	-	-	-	-	0.41
8	लद्दाख		-	-	2.71		2.68		5.39
9	मणिपुर	1.18	-	2.14	-	-	-	-	3.32
10	मेघालय	1.29	-		-	2.13		-	3.42
11	मिजोरम		8.09	2.40	-	-	-	-	10.49
12	नागालैंड	-	-	-	-	-	2.51	-	2.51
13	सिक्किम		6.80	1.49	-	-	-	-	8.29
14	त्रिपुरा		1.49		-	-	-	-	1.49
15	उत्तराखंड	0.75	2.06	16.13	-	-	-	1.55	20.49
16	पश्चिम बंगाल	-	-	-	-	2.51	-	-	2.51
	कुल	14.58	38.59	34.49	3.83	11.50	7.09	1.55	111.63

(ख) एनएमएसएचई के अंतर्गत हिमालयी राज्यों के लिए भेद्यता मूल्यांकन किया गया, जिसे आगे बढ़ाकर सूरत क्षेत्र सहित 698 जिलों को सम्मिलित करते हुए बाढ़ और सूखे के जोखिम का आकलन करने के लिए जिला स्तर पर भेद्यता और जोखिम के आकलन हेतु अखिल भारतीय अध्ययन किया गया। परिणाम बताते हैं कि सूरत बाढ़ के उच्च जोखिम वाले क्षेत्र में है और सभी जिलों में 97वें स्थान पर है। इसके अलावा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने एनएमएसएचई के अंतर्गत 13 हिमालयी राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में राज्य जलवायु परिवर्तन प्रकोष्ठों (एससीसीसी) की स्थापना/सुदृढ़ीकरण भी किया है, जिनका

कार्य जिला स्तर पर भेद्यता और जोखिम का आकलन करना और राज्य सरकारों को उनकी राज्य कार्य योजनाओं के कार्यान्वयन में सहायता करना है।

(ग) हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के पारिस्थितिक महत्व को ध्यान में रखते हुए, विभाग ने एक 'राष्ट्रीय विशेषज्ञ समिति (एनईसी)' का गठन किया है, जिसमें प्रमुख हितधारकों का एक वर्ग शामिल है, जिसमें शिक्षा जगत और अनुसंधान संगठनों के लब्धप्रतिष्ठ जलवायु वैज्ञानिक और संबंधित मंत्रालयों के प्रतिनिधि शामिल हैं। एनएमएसएचई के अंतर्गत सहायित विभिन्न अनुसंधान कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की समीक्षा और मूल्यांकन हेतु एनईसी की नियमित अंतराल पर बैठकें होती हैं। इसके अतिरिक्त, विभाग परियोजनाओं की क्षेत्र-स्तरीय समीक्षा के लिए विशेषज्ञों के दौरों की सुविधा भी प्रदान करता है। डीएसटी सहायित परियोजनाओं के वैज्ञानिक परिणामों को संबंधित हितधारकों तक पहुँचाने के लिए कार्यशालाएँ भी आयोजित करता है।

(घ) भूस्खलन और मृदा अपरदन जैसी जलवायु-जनित प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव का अध्ययन करने और उनके न्यूनीकरण के लिए विभाग ने हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की में एक उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) की स्थापना की है, जो आपदा जोखिम न्यूनीकरण, स्थिरता और अनुकूलन रणनीतियों के क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करता है। इसके अतिरिक्त, डीएसटी के पास एक समर्पित स्वायत्त संस्थान, वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान (डब्ल्यूआईएचजी), देहरादून है, जो भू-खतरों (भूकंप, भूस्खलन), हिमनद विज्ञान, भू-संसाधन आदि से संबंधित वैज्ञानिक अनुसंधान और गतिविधियां करता है।

(ङ) शहरीकरण जैसी उभरती चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से, डीएसटी ने शहरी जलवायु पर राष्ट्रीय नेटवर्क कार्यक्रम को सहायित किया और हाल ही में, बदलते परिदृश्य में शहरी जलवायु के विभिन्न पहलुओं को वैज्ञानिक रूप से समझने के लिए 'शहरी जलवायु अनुसंधान और चरम घटनाओं' पर एक विशेष आह्वान की घोषणा की है। वन, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) ने 2021 में "संरक्षित क्षेत्रों में और उसके आसपास के इकोटूरिज्म दिशानिर्देश" अधिसूचित किए हैं। इसके अलावा, पर्यटन मंत्रालय (एमओटी) ने 'सतत पर्यटन के लिए राष्ट्रीय रणनीति' भी तैयार की है, जो पर्यावरणीय स्थिरता, जैव विविधता की रक्षा और आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिरता को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

*****